कारण के भेद

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

तर्कभाषाकार के अनुसार कारण तीन हैं-"तच्च कारणं त्रिविधम्"। ये तीन प्रकार हैं-समवायि, असमवायि और निमित्त कारण-"समवायि-असमवायि-निमित्तभेदात्"।

समवायिकारण को परिभाषित करते हुए कहा गया है-"तत्र यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्"। अर्थात् समवायिकारण वह कहलाता है जिसमें समवाय सम्बन्ध से कार्य उत्पन्न होता है, उसको समवायिकारण कहते हैं। जैसे- 'तन्तवः पटस्य समवायिकारणम्'=तन्तु 'पट' के समवायिकारण हैं, क्योंकि 'तन्तुओं में ही समवाय सम्बन्ध से 'पट' उत्पन्न होता है, तुरी आदि में नहीं।

यहाँ यह ध्यातव्य है कि सम्बन्ध दो प्रकार का होता है-संयोग और समवाय। उनमें जो, दो अयुतसिद्ध (अपृथक् सिद्ध) पदार्थों का सम्बन्ध है, उसे समवाय कहते हैं। और जो अन्य पदार्थों का सम्बन्ध है, उसे 'संयोग' ही कहते हैं। इनमें तन्तु और पट अयुतसिद्ध हैं, अतः उनका सम्बन्ध समवाय है, और 'तुरी तथा पट' अयुतसिद्ध नहीं है।इसीलिए उनका सम्बन्ध संयोग है। इसे और स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि अयुतसिद्ध पदार्थों में समवाय सम्बन्ध होता है और युतसिद्धद पदार्थों में 'संयोगसम्बन्ध' होता है।

प्रश्न उठता है कि 'अयुतसिद्ध' से क्या तात्पर्य है। तर्कभाषाकार इसे स्पष्ट करते हुए कहते हैं-"ययोर्मध्ये एकमविनश्यदपराश्रितमेवावतिष्ठते तावयुतसिद्धौ"। अर्थात् जिन दो पदार्थों में से एक अविनश्यदवस्था में दूसरे पर आश्रित ही रहता है, वे दोनों पदार्थ अयुतसिद्ध कहलाते हैं। अर्थात् जिनको एक दूसरे से अलग करके नहीं देखा जा सकता है, उन दोनों को अयुतसिद्ध कहते हैं। इस लक्षण में जिन दो पदार्थों को अयुतसिद्धद कहा गया है, उनमें से केवल एक का दूसरे पर आश्रित रहना आवश्यक है। दोनों का सर्वथा साथ रहना ही आवश्यक नहीं है। जैसे, तन्तुओं से पट उत्पन्न होता है, अतः पट तन्तु पर आश्रित है, वह तन्तुओं के आश्रय के बिना नहीं रह सकता। इसीलिए 'अपराश्रितम्'

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

के आगे 'एव' शब्द को जोड़ दिया है। यहाँ पर कारणभूत जो तन्तु हैं, वे पट पर आश्रित नहीं है, बिना पट बने भी 'तन्तु' रहते हैं। एवं च अयुतसिद्ध माने गए दो पदार्थों में से केवल एक ही दूसरे पर आश्रित रहा करता है, दोनों परस्पर आश्रित नहीं रहते। । इसीलिए 'अयुतसिद्ध' के लक्षण में 'एक' शब्द का सन्निवेश किया गया है और दोनों का परस्पर सम्बन्ध 'समवाय' होता है। जैसे घट और उसका रूप, पुष्प और उसका गन्ध, जल और उसका रस आदि इन दो-दो युगलों में से एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। इस कारण से ये युगल-पदार्थ अयुतसिद्ध हैं। इनमें 'घट' गुणी (द्रव्य) है और 'रूप' उसका 'गुण' है, 'पुष्प' गुणी और 'गन्ध' उसका गुण है, 'जल' गुणी है और 'रस' उसका गुण है। गुण को गुणी से अलग नहीं किया जा सकता है। इसी प्रकार गुण और गुणी परस्पर अयुतसिद्ध हैं और उनका सम्बन्ध 'समवाय' है।

इसी प्रकार 'अवयव' और 'अवयवी'। जैसे तन्तु 'अवयव' है और पट 'अवयवी' है। तन्तु को पट से अलग नहीं किया जा सकता। इस कारण दोनों अयुतसिद्ध हैं, और उनका परस्पर सम्बन्ध 'समवाय' कहलाता है। अभिप्राय यह है कि तन्तु (अवयव) और पट (अवयवी) दोनों जितने समय तक रहते हैं, उतने समय तक अर्थात् विनाश के अन्तिम कारण तन्तुनाश का सन्निधान होने के पूर्व अपने सम्पूर्ण समय तक पट (अवयवी), अपने तन्तु (अवयव) में आश्रित ही रहता है। इसीलिए तन्तु और पट अयुतसिद्ध हैं। किन्तु तुरी और पट में अयुतसिद्धत्व नहीं है, क्योंकि उन दोनों में कोई अपनी अविनश्यता के सम्पूर्ण समय तक दूसरे के आश्रित होकर नहीं रहता। न तुरी ही पट के आश्रित होकर रहती है और न पट ही तुरी में आश्रित होकर रहता है। दोनों ही अपनी अविनश्यदवस्था में कभी-कभी दीर्घकाल तक एक दूसरे से दूर रहते हैं। अतः उनका (तुरी और पट) संयोगसम्बन्ध ही माना गया है, समवाय सम्बन्ध नहीं।

इसी प्रकार क्रिया और क्रियावान्। उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण, गमन आदि कर्म को क्रिया कहते हैं और वह क्रिया जिसमें रहती है उसे क्रियावान् कहते हैं। क्रियावान् में ही क्रिया रहती है। क्रियावान् से क्रिया को अलग नहीं किया जा सकता। इस कारण दोनों अयुतसिद्ध हैं और उनका सम्बन्ध 'समवाय' है।

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

असमवायिकारण को परिभाषित करते हुए तर्कभाषाकार ने कहा है- "यत्समवायिकारणप्रत्यासन्नमवधृतसामर्थ्यं तदसमवायिकारणम्"। अर्थात् 'असमवायिकारण' उस 'कारण' को कहा जाता है, जो समवायिकारण में रहता है हो (प्रत्यासन्न हो) और कार्योत्पादन करने में जिसका सामर्थ्य निश्चित हो। अर्थात् 'अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्व' रूप कारण का लक्षण समन्वित हो रहा हो, उस कारण को असमवायिकारण कहते हैं।

उदाहरण- 'तन्तुसंयोगः पटस्यासमवायिकारणम्। तन्तुसंयोगस्य गुणस्य, पटसमवायिकारणेषु तन्तुषु गुणिषु, समवेतत्वेन समवायिकारणे प्रत्यासन्नत्वात्, अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्वेन पटं प्रति कारणत्वाच्च'। अर्थात् 'तन्तुसंयोग', पट का (पटात्मक कार्य का) असमवायिकारण है। क्योंकि 'तन्तुसंयोग' (स्वयं) गुणपदार्थ है, वह तन्तुसंयोग, पट (कार्य) के समवायि कारण तन्तुसंज्ञक गुणियों से 'समवेत' है, यानी सम्बन्ध से रहता है। इसीलिए 'पट' के समवायिकारण (तन्तुओं) में वह प्रत्यासन्न (वृत्ति) हुआ। और साथ ही साथ वह (तन्तुसंयोगरूपकारण) पटात्मक कार्य के प्रति 'अन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्व' इस 'कारणलकक्षण' से समन्वित भी है, इसीलिए पट के प्रति कारण भी है। इस रीति से 'तन्तुसंयोग' पट का असमवायिकारण होता है।

इसी प्रकार 'तन्तुरूप' (तन्तु का रूप) 'पटरूप' (पट के रूप) के प्रति असमवायिकारण है-'एवं तन्तुरूपं पटरूपस्य असमवायिकारणम्'।

वस्तुतः असमवायिकारण के लक्षण में से यदि 'समवायि' पद को हटा दें तो शेष लक्षण 'यत्कारणप्रत्यासन्नम् अवधृतसामर्थ्यं (च) तदसमवायिकारणम्'-इतना ही होगा और इसका अर्थ यह होगा-जो किसी कार्य के कारण में प्रत्यासन्न (विद्यमान) होता हुआ, उस कार्य के प्रति निश्चितरूप से कारण भी हो, वह उस कार्य का असमवायिकारण कहलाता है। तब 'समवायि' पद से रहित उक्त शेष लक्षण की 'चक्षु-घट संयोग' में अतिव्याप्ति होगी अर्थात् घटचाक्षुष (घटप्रत्यक्ष) कार्य का 'चक्षु-घट-संयोग', असमवायिकारण कहलायेगा क्योंकि प्रत्यक्ष (घटचाक्षुष यानि घटप्रत्यक्ष) के प्रति निमित्तकारण 'विषय' (घट) होता है। इस कारण 'घट', 'घटचाक्षुष' का निमित्तकारण है, और 'चक्षु-घटसंयोग', उस निमित्तकारणभूत 'घट' में प्रत्यासन्न (विद्यमान) है, और प्रत्यक्ष में इन्द्रियार्थसन्निकर्ष की निमित्तकारणता

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

निश्चित है, अर्थात् वह इन्द्रियार्थसन्निकर्ष (चक्षु-घटसंयोग) में उक्त असमवायिकारण का लक्षण समन्वित हो जाने से अतिव्याप्ति हो जाती है। उसे दूर करने के लिए 'असमवायिकारण के लक्षण' में 'समवायि' पद अवश्य देना चाहिए। तब 'यत् समवायिकारणप्रत्यासन्नम् अवधृतसामर्थ्यं च तत् असमवायिकारणम्' यह असमवायिकारण का लक्षण होगा और उसकी अतिव्याप्ति भी नहीं होगी क्योंकि 'घट', 'घटचाक्षुष' कार्य का समवायिकारण नहीं है, अपितु निमित्तकारण है। अतः उस निमित्तकारणभूत घट में प्रत्यासन्न जो 'चक्षु-घटसंयोग' (इन्द्रियार्थसन्निकर्ष) है, वह 'घटचाक्षुष' (घटप्रत्यक्ष) के समवायिकारण में प्रत्यासन्न न रहने से उसको 'घटचाक्षुष' का असमवायिकारण नहीं कह सकेंगे।

उसी प्रकार यदि लक्षण से 'अवधृतसामर्थ्यम्'-इस 'विशेष्य अंश' को हटा दिया जाए तो 'यत्समवायिकारणे प्रत्यासन्नं तत् असमवायिकारणम्' अर्थात् 'जो किसी कार्य के समवायिकारण में प्रत्यासन्न हो, वह उस कार्य का असमवायिकारण होता है-इतना ही लक्षण होगा। तब तो किसी कार्य के प्रति अन्यथासिद्ध अथवा नियतपूर्ववर्ती नहीं है, किन्तु उस कार्य के समवायिकारण में प्रत्यासन्न है, उसमें 'असमवायिकारण' का लक्षण समन्वित होने लगेगा अर्थात् उक्त लक्षण की अतिव्याप्ति होगी। जैसे-'तन्तुरूप' एवं 'तन्तु-मक्षिकासंयोग' यद्यपि पटकार्य के प्रति अन्यथासिद्ध और अनियतपूर्ववर्ती हैं, किन्तु पट के समवायिकारणभूत तन्तु में समवायसम्बन्ध से प्रत्यासन्न है। अतः उसे पटकार्य के प्रति असमवायिकारण कहना होगा। इस अतिव्याप्ति को दूर करने के लिए 'अवधृतसामर्थ्यम'-इस विशेष्य अंश को दिया गया है। इस अंश के देने से अतिव्याप्ति दूर हो जाती है क्योंकि जिसमें कारण का लक्षण निश्चित किया गया हो, वही असमवायिकारण होगा।'तन्तुरूप' तो 'पटकार्य' के प्रति अन्यथासिद्ध है। इसीलिए उसे 'पटकार्य' का कारण ही नहीं कह सकते, तब उसे असमवायिकारण कहना तो बहुत दूर है।

निमित्तकारण को परिभाषित करते हुए तर्कभाषाकार का कथन है-"निमित्तकारणं तदुच्यते। यन्न समवायिकारणं, नाप्यसमवायिकारणम्। अथ च कारणं तन्निमित्तकारणम्"। अर्थात् जो न समवायिकारण

है और न असमवायिकारण है, फिर भी उसे कारण कहते हैं अर्थात् जिसमें कारण का 'अनन्यथासिद्धनियतपूर्वभावित्व' लक्षण समन्वित हो जाता है, उसे निमित्त कारण कहते हैं।

निमित्त कारण के लक्षण में तीन अंश हैं-क) यन्न समवायिकारणम्-यदि यह पद न रखा जाए तो पट के समवायिकारण तन्तु में इस लक्षण की अतिव्याप्ति होने लगेगी।ख) नाप्यसमवायिकारणम्-यह पद न रखा जाता तो तन्तुसंयोग आदि में अतिव्याप्ति हो जाती। ग) अथ च कारणम्-यदि यह अंश न रखा जाए तो रासभ आदि भी पट के निमित्त कारण होने लगते।

उदाहरण देते हुए तर्कभाषाकार कहते हैं- 'यथा वेमादिकं पटस्य निमित्तकारणम्'। अर्थात् जैसे वेमा आदि पट के निमित्तकारण हैं। यद्यपि वेम अपने रूप आदि गुणी के प्रति समवायिकारण है तथापि वह पट के प्रति समवायि कारण नहीं क्योंकि वह पट के समवायिकारण तन्तुओं में प्रत्यासन्न नहीं है। फिर भी वेम पट का कारण तो है ही। अतः वेम को पट का निमित्त कारण कहा गया है।

ये तीन प्रकार के (समवायि, अमवायि और निमित्त) कारण, केवल भाव (सत्) पदार्थों के ही होते हैं। अभाव पदार्थ का तो केवल 'निमित्तकारण' ही होता है क्योंकि उस अभाव का कहीं भी (किसी भी पदार्थ के साथ) समवायसम्बन्ध नहीं रहता, इसीलिए कोई पदार्थ, उसका (अभाव का) समवायिकारण नहीं कहलाता। और, जब उसका कोई समवायिकारण ही नहीं, तब कोई उसका असमवायिकारण भी नहीं हो सकता। इसीलिए निमित्त कारण ही होता है। समवाय तो दो भाव पदार्थों का ही धर्म हुआ करता है-"तदेतद् भावानामेव त्रिविधं कारणम्। अभावस्य तु निमित्तमात्रं, तस्य क्वचिदप्यसमवायात्। समवायस्य भावद्वयधर्मत्वात्"।

Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi